ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–९७
दिनांक- मंगलवार, २१ दिसम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 20.9 एवं 7.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 95 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 55 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.9 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 11.3 एवं दोपहर में 20.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(22–26 दिसम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 22–26 दिसम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। सुबह में मध्यम कुहासा छा सकता है।
- औसतन 10 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो –तीन दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पूर्वा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई २५ दिसम्बर से पहले संपन्न कर लें। इसके बाद बुआई करने पर उपज में कमी आ सकती है। गेहुँ की जो फसल २१–२५ दिनों की हो गई हो, में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है, जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- अगात बोयी गई रबी मक्का की ५०–५५ दिनों की फसल में ५० किलोग्राम नत्रजन का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करे। इस कीट के पिल्लू टमाटर को बहुत अधिक नुकसान पहुचाते है। ये कच्चे तथा पके टमाटरो में छेद करके उनके अन्दर घुस कर गुदा खाते है। कीट के मल–मूत्र के कारण फल में सड़न प्रारंभ हो जाती है जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव हेतु ८–१० फेरोमौन ट्रैप प्रति हेक्टेयर खेत में लगाये। ब्यूभेरिया बेसियाना जैविक कीटनाशी का १ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी या इन्डोक्साकार्ब १४.५ एस०सी० १ मी०ली० प्रति २.५ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- आलू की फसल में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। रोग का प्रकोप फसल में दिखने पर इसके बचाव हेतु २.५ ग्राम डाई–इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। कीट–व्याधी की निगरानी करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए १ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- चना की फसल में चना की सुंडी की निगरानी करें। इस कीट से फसल को काफी हानी होती है। शुरु में यह सुंडी चने की पत्तियों एवं कोमल टहनीयों को क्षती पहुँचाती है। फलिया आ जाने पर सुंडी फलों में छेद कर घुस जाती है तथा अन्दर ही अन्दर दाने को खाती रहती है। फलियाँ खोखला हो जाने पर दूसरे स्वस्थ फलियों को खाती है। खेत में इसे चने के फलियों में आधी अन्दर तथा आधी बाहर की ओर लटका देखा जा सकता है। अत्यधिक प्रक्रोप की स्थिती में प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.५ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से ६०० से ८०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।
- प्याज के ५०–५५ दिनों के तैयार पौध की पाँक्ति से पँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे।

आज का अधिकतम तापमानः 22.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.6 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 7.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.5 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी